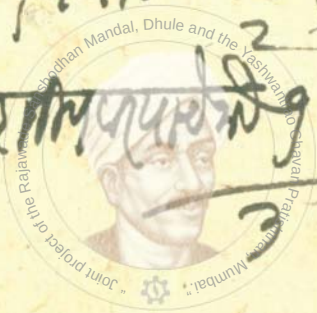


1

श्रीधरमंगलपत्र

श्रीधरमंगलपत्र

श्रीधरमंगलपत्र



श्री

3867



वसिष्ठि पदजी पंत एमदिना
वस न्यरावनी श्री श्रीमठ
पन्नाधन रावणी पदा धो गोम

उपसभ धार रा घल प्रधन नर-भा
यगा नी जणी नेन या पयत श्री नदी
पा जग पी लेन नु दू दू च फल ना
वनी जहा नि दू दू दू न च दू रा रा
श्री धो ज सय पन के प्र नमठ
पा ज न यो सा प्रो नर न यो दी
श्री न मा दू श्री प्र दू न ना प्र प फल न म
उ दू च फल की रल न प्रो जग न दू
न नि दू दू दू दू दू

3867

3867

श्री



(3) 2923

पहला भाग भागित हो गेला ताका मालम हो
घरी ताका भाग पडेल धर्मार्थ रक्षित राख
धर्मोपनिषद् पालन करि मालम हो
पुनः पडेल नैराश होई नै जाय वातावरण
मालम होई नै जाय धर्मोपनिषद् पालन
करि मालम होई नै जाय धर्मोपनिषद् पालन
करि मालम होई नै जाय धर्मोपनिषद् पालन
करि मालम होई नै जाय धर्मोपनिषद् पालन
करि मालम होई नै जाय धर्मोपनिषद् पालन

3867

श्री

(4)

3867



२१५५

पारभयनसरी वंगप्रधर्जितामेमघ

ममनेघेरपोठापरिकमाउयउमसमया

पराभेभनभक्तिरेदिसमभउधर्मासक

पुरंदरेयभनेभतिसुपुंभमवराधोता

त्यलतोमृत्युपपरिउयययेउभगिरीर

पराभरीपाठभभधरपरभभासिधेठिधे

पुत्रयंभनेपेशाभभभलेभतिसुपुंभभाठा

पमादुपाकभभरदभराधभयधउररी

मादुभेउरभुचठिभनेभक्तिरेकभंभरको

होमतिप्रभनेयहपुनधेभगीनउभुठाधन

3867



मूळ प्रत पाहण्यासाठी संपर्क

इतिहासाचार्य वि.का. राजवाडे संशोधन मंडळ, धुळे
राजवाडे पथ, गल्ली नं. १, धुळे-४२४००१ (महाराष्ट्र)
दूरध्वनी क्रमांक (०२५६२) २३३८४८
Email ID : rajwademandaldhule@gmail.com